चंबल तट पर मेहमान पक्षियों का डेरा

प्रमोद भार्गव

कुख्यात चंबल नदी की सतह एवं तट पर देशी-विदेशी मेहमान पक्षी बड़ी संख्या में बेखौफ डेरा डाले हुए हैं। दस्यु आतंक के लिए स्थायी भाव बन चुके चंबल के बीहड़ों में ये पक्षी स्वच्छंद कलरव करते हुए अपनी संतति बढ़ाने में मग्न हैं। प्रवासी पक्षियों का हज़ारों किलोमीटर का सफर तय करके ठंडे स्थलों से गर्म स्थलों पर आना अनादि काल से जारी है। इनके लिए किसी भी देश की सीमा के उल्लंघन के लिए न किसी दंड की व्यवस्था है और न ही ये किसी नदी, झील अथवा तालाब में पड़ाव डालने के लिए किसी राष्ट्र की सरकार से इज़ाजत के मोहताज़ हैं।

चंबल नदी की विशाल सतह और विशाल रेतीले तट हर साल अक्टूबर-नवंबर से मार्च तक इन अतिथि पक्षियों के स्वागत सत्कार के लिए तत्पर रहते हैं। इस नदी पर लाखों पक्षी अपने खानाबदोश जीवन का कुछ समय गुज़ारने के लिए अस्थायी बसेरा बनाते हैं।

इन प्रवासी पक्षियों का रहस्यमय व दिलचस्प पहलू यह है कि ये किसी दिशा बोध के आधार पर हज़ारों किलोमीटर की यात्रा कर गंतव्य तक पहुंचते हैं और फिर जाड़ा बीतते ही किस छठी इन्द्रिय की दस्तक होने पर लौटकर अपने पूर्व निवास स्थानों पर पहुंचते हैं। ब्रिटेन में पक्षी विज्ञानियों द्वारा किए गए शोध से मालूम हुआ कि वार्बलर नाम की एक छोटी-सी चिड़िया केवल रात में ही सफर करती है। आर्क्टिक कुर्री नाम की चिड़िया करीब बीस हज़ार किलोमीटर की दूरी तय करके चंबल नदी व अन्य झीलों में डेरा डालती है।

धोबन (वैगटेल) चिड़िया के आने का संकेत तो यही है कि अब जाड़ा आया। भारत की गुल्फ कही जाने वाली स्कीमर्स चिड़िया भी गुजरात के कच्छ क्षेत्र से आकर चंबल में डेरा डाले हुए है। काले भूरे रंग की इस चिड़िया की खासियत यह है कि यह आकाश में काफी ऊंचाई तक झुंड बनाकर उड़ती है। इसका मुख्य भोजन मछलियां और घास की कोपलें हैं।

चंबल के हरे पानी में हरियाली छटा को और निखारने के लिए बतख के मानिन्द फ्लेमिंगो चिड़िया भी गुजरात से आकर चंबल की मेजबानी कर रही है। फ्लेमिंगो के पंख गहरे लाल होते हैं और जब यह पक्षी झुंड बनाकर उड़ते हैं तो मनमोहक छटा बिखेरते हैं। ये मेहमान पक्षी सात हज़ार फीट की ऊंचाई तक उड़ान भरते देखे गए हैं।

चंबल नदी पर बड़ी संख्या में पिनटेल आते हैं। यह एक प्रकार की बतख है। इनकी पूंछ सुई की नोक जैसी होती है, इसलिए इन्हें पिनटेल कहते हैं। इनके पैरों में डाले गए छल्लों के अध्ययन से पता चलता है कि चंबल नदी में ही नहीं पूरे भारत में पिनटेल रूस के कैस्पियन सागर और साइबेरिया क्षेत्रों से आते हैं और गर्मियों की शुरुआत का आभास होते ही ये जलीय पक्षी अपने पुराने आवासों की ओर लौट जाते हैं।

चंबल नदी के दोनों तटों पर बीहड़ों का अटूट सिलसिला है। आसपास कोई मानव व औद्योगिक हलचल भी नहीं है। चंबल का यह क्षेत्र घड़ियाल अभयारण्य के रूप में संरक्षित होने के कारण यहां पर किसी भी प्रकार के खनन व भारी वाहनों के आवागमन पर प्रतिबंध है। यहां का वातावरण कमोबेश शांत और निशब्द है। इसलिए हिमालय व कश्मीर में भारी हिमपात होने पर यहां पक्षियों ने बड़ी तादात में इस साल डेरा डाला है। अब तक 177 प्रवासी व अप्रवासी पक्षियों की पहचान की गई है। ये पक्षी तिब्बत, मंगोलिया, चीन, साइबेरिया, बांग्लादेश, श्रीनगर, शिमला, लेह व लद्दाख सहित अन्य कई भारतीय क्षेत्रों से यहां आए हुए हैं।

ये मेहमान पक्षी इतना लंबा, दुर्गम और जोखिम भरा सफर तय कर क्यों आते-जाते हैं, इसकी सर्वमान्य वैज्ञानिक समझ अभी सामने नहीं आई है। अनुमान है कि ठंडे इलाकों

में शीत ऋतु के दौरान बर्फ के जमने से इन पक्षियों के सामने आहार की दिक्कत खड़ी हो जाती है और ये गरम क्षेत्रों की ओर प्रस्थान शुरू कर देते होंगे? पक्षी प्रजातियों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस आवागमन के जारी रहने के फलस्वरूप इनमें प्रवास पर जाने की प्रवृत्ति पड़ गई होगी।

विभिन्न अध्ययनों से यह भी पता चला है कि अनेक पक्षी अपने नवजात शिशु लेकर मेहमान-नवाज़ी करने आते हैं। जहां एक बार अनुकूल वातावरण, पौष्टिक आहार और आवास की सुरक्षित व्यवस्था प्राप्त होती है वहां ये फिर आते हैं। अच्छे माहौल में ये अपने शिशुओं का उचित लालन-पालन कर उन्हें विकसित भी करते हैं। प्रवासी पक्षी प्रजनन करते नहीं देखे गए हैं। चंबल नदी पर किए गए अध्ययनों से यह पता चला है कि दोबारा आने वाले पक्षी उसी स्थान पर पड़ाव डालते हैं, जहां पिछले साल डाला था।

पक्षियों के गंतव्य तक पहुंचने के दिशा बोध के बारे में पक्षी विशेषज्ञों का मानना है कि ये तारों, तालाब, नदी, पहाड़ आदि संकेतों को दिमाग में रखकर गंतव्य तक पहुंचते हैं। वैसे अधिकांश पक्षी विशेषज्ञों की राय है कि ये पक्षी रात में अपना सफर तय करते हैं। दिन में ये भोजन आदि कर थकान मिटाते हैं। इंग्लैण्ड के डॉ. जे. आर. रिले और कनाडा के क्रेडफील्ड इंस्टीट्यूट के जी. स्केफर द्वारा पक्षियों की रात में चलने की आदत के अध्ययन से पता चला कि इन प्रवासी पक्षियों का मार्ग प्रशस्त करने में पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनको दिशा ज्ञान इसी चुंबकीय प्रभाव की मदद से होता है। इन पक्षियों में प्रकाश व वातावरण में फैली गंध का अनुभव करने की भी बेजोड़ क्षमता होती है। ये पक्षी महक की अनुभूति के सहारे अपने घोंसलों तक आसानी से पहुंच जाते हैं। ये बहुत मंद ध्वनि सुनने में भी निपुण होते हैं और इसकी मदद से अपना मार्ग ढूंढ लेते हैं।

अपवाद स्वरूप कुछ प्रवासी पक्षी दिन में भी अपना सफर तय करते हैं। ये पक्षी सूर्य के पृथ्वी के साथ बनने वाले कोण के आधार पर दिशा बोध करते हैं। शायद इसलिए ये पक्षी उस समय भटकते देखे गए हैं जब कई दिनों तक आसमान में बादल छाए रहते हैं।

अध्ययनों से यह भी पता चला है कि इन प्रवासी पक्षियों में प्रवास स्थलों पर सबसे पहले नर पहुंचते हैं। पीछे-पीछे वयस्क मादा पहुंच जाती है और सबसे पीछे इनके नवजात शिशु। वापसी में यह क्रम उल्टा होता है - अग्रिम पंक्ति में शिशु से युवा हो चुके पक्षी होते हैं। आश्चर्य यह है कि युवा पक्षी बिना रास्ता भटके गंतव्य पर पहुंच जाते हैं। इससे यह धारणा बनी है कि पक्षियों में दिशा ज्ञान जन्मजात होता है।

भारत में प्रवासी पक्षियों के अध्ययन की सिलसिलेवार शुरुआत नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी, मुम्बई ने 1926 में की थी। इस अध्ययन के दौरान प्रवासी पक्षियों को पकड़कर उनके पैरों में एक छल्ला पहनाया जाता है। इस छल्ले पर नंबर और बांधने वाली संस्था का नाम खुदा होता है। छल्ला पहनी चिड़िया जब किसी अन्य स्थान पर पकड़ी या पाई जाती है तो संस्था को इसकी खबर दी जाती है। इस तरह यह मालूम चल जाता है कि चिड़िया किस मार्ग से होती हुई कहां पहुंची। वैसे बमुश्किल पांच फीसदी पक्षियों की ही सूचना मिल पाती है।

नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी ने पक्षियों को छल्ला बांधने के केंद्र घाना पक्षी अभयारण्य, भरतपुर और कैलीमर पक्षी विहार, तमिलनाडु में खोल रखे हैं। चंबल नदी पर आने वाले प्रवासी पक्षियों को भी 1985-86 में छल्ले बांधे गए थे, पर अब न तो यहां छल्ला पहनाए पक्षियों की जानकारी है और न ही इस विधि का अब संपादन हो रहा है।

घड़ियाल अभयारण्य देवरी (मुरैना) के वन परिक्षेत्र अधिकारी डॉ. ऋषिकेश शर्मा का कहना है कि वैसे तो यह अभयारण्य खास तौर से घड़ियाल संरक्षण के लिए बनाया गया है लेकिन इन दिनों हिमालय में ज़बर्दस्त बर्फबारी होने के कारण वहां से पक्षी चंबल की ओर आए हैं। चंबल नदी का इस क्षेत्र में एक बड़ा हिस्सा उथला होने, फैलाव ज़्यादा होने और मनपसंद वनस्पतियों व कीड़े-मकोड़ों की बहुलता होने से यह इलाका देशी-विदेशी मेहमान पक्षियों को खूब रास आ रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***